ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 301-303**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता और स्वदेशीकरण

डॉ0 अनूप कुमार श्रीवास्तव
असिस्टेंट प्रोफेसर– रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, महाविद्यालय भटवली बाजार, उनवल, गोरखपुर (उ0प्र0) भारत

Received-15.12.2024, Revised-21.12.2024, Accepted-28.12.2024 **E-mail:dranuplal79@gmail.com**

सरांश : *किसी भी राष्ट्र की सुरक्षा, संप्रभुता एवं वैश्विक प्रतिष्ठा उसके रक्षा तंत्र की मजबूती पर निर्भर करती है। आधुनिक समय में रक्षा क्षेत्र केवल सैन्य शक्ति तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि यह तकनीकी विकास, आर्थिक क्षमता तथा राष्ट्रीय आत्मनिर्भरता का भी महत्वपूर्ण आधार बन चुका है। भारत लंबे समय तक रक्षा उपकरणों एवं सैन्य तकनीक के लिए विदेशी देशों पर निर्भर रहा है, जिसके कारण आर्थिक बोझ तथा सामरिक चुनौतियाँ उत्पन्न होती रही हैं।*

इसी परिप्रेक्ष्य में भारत सरकार ने रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता एवं स्वदेशीकरण को प्राथमिकता दी है। "आत्मनिर्भर भारत अभियान", "मेक इन इंडिया" तथा रक्षा उत्पादन नीति जैसी योजनाओं के माध्यम से स्वदेशी रक्षा उत्पादन को बढ़ावा दिया जा रहा है। आज भारत मिसाइल, युद्धपोत, लड़ाकू विमान, ड्रोन, रडार तथा आधुनिक सैन्य उपकरणों के निर्माण में महत्वपूर्ण प्रगति किया है।

रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता से विदेशी आयात पर निर्भरता कम होगी, रोजगार के अवसर बढ़ेंगे, तकनीकी विकास को गति मिलेगी तथा राष्ट्रीय सुरक्षा मजबूत होगी। हालांकि अनुसंधान की कमी, तकनीकी चुनौतियाँ, निजी क्षेत्र की सीमित भागीदारी तथा विदेशी प्रतिस्पर्धा जैसी समस्याएँ अभी भी मौजूद हैं।

प्रस्तुत लेख में रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता एवं स्वदेशीकरण की अवधारणा, भारत की वर्तमान स्थिति, सरकारी नीतियाँ, उपलब्धियाँ, चुनौतियाँ तथा भविष्य की संभावनाओं का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

कुंजीभूत शब्द– आत्मनिर्भरता, स्वदेशीकरण, सुरक्षा, संप्रभुता, वैश्विक प्रतिष्ठा, "मेक इन इंडिया, तकनीकी विकास, आर्थिक क्षमता।

प्रस्तावना– भारत विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देशों में से एक है तथा इसकी भौगोलिक स्थिति सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत की सीमाएँ कई देशों से जुड़ी हैं, जिनमें कुछ देशों के साथ सीमा विवाद भी मौजूद हैं। ऐसी स्थिति में मजबूत रक्षा व्यवस्था राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए अनिवार्य हो जाती है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत ने रक्षा क्षेत्र के विकास हेतु कई प्रयास किए, किन्तु लंबे समय तक रक्षा उपकरणों के आयात पर निर्भरता बनी रही। भारत विश्व के प्रमुख रक्षा आयातक देशों में शामिल रहा है। विदेशी हथियारों एवं तकनीक पर अत्यधिक निर्भरता के कारण आर्थिक बोझ बढ़ा तथा युद्धकालीन परिस्थितियों में सामरिक जोखिम भी उत्पन्न हुए।

21वीं शताब्दी में बदलते वैश्विक परिदृश्य, आतंकवाद, सीमा विवाद तथा आधुनिक युद्ध तकनीकों ने रक्षा आत्मनिर्भरता की आवश्यकता को और अधिक बढ़ा दिया है। इसी कारण भारत सरकार ने स्वदेशी रक्षा उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए।

"मेक इन इंडिया", "आत्मनिर्भर भारत" तथा रक्षा उत्पादन एवं निर्यात संवर्धन नीति के माध्यम से देश में रक्षा निर्माण उद्योग को विकसित करने का प्रयास किया जा रहा है। आज भारत मिसाइल तकनीक, अंतरिक्ष रक्षा, साइबर सुरक्षा तथा नौसेना शक्ति के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति कर रहा है।

रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता केवल सैन्य आवश्यकता नहीं, बल्कि राष्ट्रीय विकास, तकनीकी उन्नति तथा आर्थिक सशक्तिकरण का भी आधार है।

आत्मनिर्भरता एवं स्वदेशीकरण की अवधारणा–

आत्मनिर्भरता: आत्मनिर्भरता का अर्थ है– किसी राष्ट्र का अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए स्वयं सक्षम होना। रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता का तात्पर्य रक्षा उपकरणों, हथियारों तथा तकनीकों का स्वदेश में निर्माण करना है।

स्वदेशीकरण: स्वदेशीकरण का अर्थ है विदेशी उत्पादों एवं तकनीकों के स्थान पर देश में निर्मित वस्तुओं एवं तकनीकों का उपयोग बढ़ाना।

रक्षा क्षेत्र में स्वदेशीकरण का उद्देश्य–

- विदेशी आयात पर निर्भरता कम करना,
- घरेलू उद्योगों को बढ़ावा देना,
- तकनीकी विकास को प्रोत्साहन देना,
- राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूत करना है।

भारत में रक्षा क्षेत्र की स्थिति– भारत विश्व की सबसे बड़ी सेनाओं में से एक है।

- Indian Army
- Indian Navy
- Indian Air Force

देश की सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारत लंबे समय तक रूस, अमेरिका, फ्रांस एवं इज़राइल जैसे देशों से रक्षा उपकरण आयात करता रहा है। हालांकि पिछले कुछ वर्षों में स्वदेशी रक्षा उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की आवश्यकता–

1. **राष्ट्रीय सुरक्षा:**विदेशी हथियारों पर निर्भरता युद्धकालीन परिस्थितियों में जोखिमपूर्ण हो सकती है। यदि किसी देश द्वारा आपूर्ति रोक दी जाए, तो सुरक्षा प्रभावित हो सकती है।
2. **आर्थिक बचत:** रक्षा उपकरणों के आयात पर भारी विदेशी मुद्रा खर्च होती है। स्वदेशी उत्पादन से आर्थिक संसाधनों की बचत होगी।
3. **तकनीकी विकास:** रक्षा अनुसंधान एवं उत्पादन से विज्ञान एवं तकनीक को बढ़ावा मिलता है।
4. **रोजगार सृजन:** रक्षा उद्योगों के विकास से इंजीनियरों, तकनीशियनों एवं श्रमिकों के लिए रोजगार के अवसर बढ़ते हैं।

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

5. **निर्यात क्षमताः** यदि भारत आधुनिक रक्षा उपकरणों का निर्माण करेगा, तो वह अन्य देशों को निर्यात भी कर सकेगा।

रक्षा क्षेत्र में भारत की प्रमुख उपलब्धियाँ–

1. **मिसाइल तकनीक का विकासः** भारत ने स्वदेशी मिसाइल तकनीक में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है।
   - Agni Missile
   - Prithvi Missile
   - BrahMos

जैसी मिसाइलें भारत की सामरिक शक्ति को मजबूत करती हैं।

2. **स्वदेशी लड़ाकू विमानः** HAL Tejas भारत का स्वदेशी लड़ाकू विमान है। यह भारतीय रक्षा उत्पादन क्षमता का महत्वपूर्ण उदाहरण है।

3. **युद्धपोत एवं पनडुब्बी निर्माणः** भारत ने स्वदेशी युद्धपोत एवं विमानवाहक पोत निर्माण में उल्लेखनीय प्रगति की है। INS Vikrant इसका प्रमुख उदाहरण है।

4. **रक्षा अनुसंधान संगठन की भूमिकाः** Defence Research and Development Organisation, (DRDO) ने रक्षा अनुसंधान एवं तकनीकी विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

5. **ड्रोन एवं साइबर सुरक्षाः** भारत आधुनिक ड्रोन तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथा साइबर सुरक्षा प्रणाली के विकास पर भी बल दे रहा है।

सरकारी नीतियाँ एवं पहल–

1. **आत्मनिर्भर भारत अभियानः** इस अभियान का उद्देश्य रक्षा क्षेत्र सहित विभिन्न क्षेत्रों में स्वदेशी उत्पादन को बढ़ावा देना है।
2. **मेक इन इंडियाः** Make in India अभियान के अंतर्गत रक्षा निर्माण क्षेत्र में विदेशी एवं घरेलू निवेश को प्रोत्साहित किया गया।
3. **रक्षा उत्पादन एवं निर्यात संवर्धन नीतिः** इस नीति का उद्देश्य भारत को वैश्विक रक्षा उत्पादन केंद्र बनाना है।
4. **निजी क्षेत्र की भागीदारीः** सरकार ने निजी कंपनियों को रक्षा उत्पादन में भाग लेने की अनुमति दी है।
5. **सकारात्मक स्वदेशीकरण सूचीः** सरकार ने कई रक्षा उपकरणों के आयात पर प्रतिबंध लगाकर स्वदेशी निर्माण को बढ़ावा दिया है।

रक्षा क्षेत्र में निजी कंपनियों की भूमिका– आज कई भारतीय कंपनियाँ रक्षा उत्पादन में सक्रिय हैं:

- Hindustan Aeronautics Limited
- Bharat Electronics Limited
- Tata Advanced Systems
- Larsen & Toubro

इन कंपनियों ने रक्षा उत्पादन एवं तकनीकी विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

रक्षा आत्मनिर्भरता की चुनौतियाँ–

1. **तकनीकी निर्भरताः** कुछ आधुनिक तकनीकों के लिए भारत अभी भी विदेशी देशों पर निर्भर है।
2. **अनुसंधान एवं विकास की कमीः**रक्षा अनुसंधान पर पर्याप्त निवेश की आवश्यकता है।
3. **उत्पादन में देरीः** कई रक्षा परियोजनाओं में समय से अधिक विलंब होता है।
4. **निजी क्षेत्र की सीमित भागीदारीः** निजी कंपनियों की भागीदारी अभी अपेक्षाकृत कम है।
5. **वैश्विक प्रतिस्पर्धाः** अंतरराष्ट्रीय रक्षा बाजार में प्रतिस्पर्धा अत्यधिक कठिन है।

रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता का आर्थिक प्रभाव–

1. **विदेशी मुद्रा की बचतः** स्वदेशी उत्पादन से आयात में कमी आएगी।
2. **औद्योगिक विकासः** रक्षा उद्योग अन्य उद्योगों को भी प्रोत्साहन देता है।
3. **रोजगार सृजनः** रक्षा उत्पादन से लाखों लोगों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रोजगार प्राप्त हो सकता है।
4. **तकनीकी नवाचारः** रक्षा अनुसंधान से नई तकनीकों का विकास होता है, जिनका उपयोग नागरिक क्षेत्रों में भी किया जा सकता है।

राष्ट्रीय सुरक्षा पर प्रभाव– रक्षा आत्मनिर्भरता भारत की सामरिक स्वतंत्रता को मजबूत करती है। यह युद्धकालीन परिस्थितियों में त्वरित सैन्य तैयारी सुनिश्चित करती है। स्वदेशी तकनीक से सुरक्षा संबंधी गोपनीयता भी बनी रहती है।

भविष्य की संभावनाएँ– भारत भविष्य में वैश्विक रक्षा उत्पादन केंद्र बनने की क्षमता रखता है।

संभावित विकास क्षेत्र–

- कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित रक्षा प्रणाली
- साइबर सुरक्षा
- अंतरिक्ष रक्षा तकनीक
- ड्रोन एवं रोबोटिक युद्ध प्रणाली
- स्वदेशी हथियार निर्यात

यदि अनुसंधान, तकनीकी शिक्षा एवं निजी क्षेत्र को और प्रोत्साहन दिया जाए, तो भारत रक्षा क्षेत्र में विश्व शक्ति बन सकता है।

भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा, सामरिक शक्ति तथा वैश्विक प्रतिष्ठा के लिए रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता अत्यंत आवश्यक है। लंबे समय तक भारत अपनी सैन्य आवश्यकताओं के लिए विदेशी देशों पर निर्भर रहा, जिसके कारण युद्ध अथवा संकट की परिस्थितियों में रणनीतिक चुनौतियाँ उत्पन्न होती रहीं। इसी पृष्ठभूमि में "आत्मनिर्भर भारत" अभियान के अंतर्गत रक्षा क्षेत्र में स्वदेशीकरण को विशेष महत्व दिया गया है।

रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता का अर्थ है कि देश अपनी सैन्य आवश्यकताओं: जैसे हथियार, गोला–बारूद, मिसाइल, लड़ाकू विमान, टैंक, युद्धपोत, संचार प्रणाली तथा रक्षा तकनीक का निर्माण स्वयं करे। स्वदेशीकरण केवल उत्पादन तक सीमित नहीं है, बल्कि अनुसंधान, विकास, तकनीकी नवाचार तथा निर्यात क्षमता को भी समाहित करता है।

भारत ने हाल के वर्षों में इस दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति की है। स्वदेशी लड़ाकू विमान तेजस, मिसाइल प्रणाली अग्नि, पृथ्वी, आकाश, युद्धपोत आईएनएस विक्रांत, तथा ब्रह्मोस जैसी परियोजनाएँ भारत की तकनीकी क्षमता को दर्शाती हैं। रक्षा आयात पर चरणबद्ध प्रतिबंध, निजी क्षेत्र एवं स्टार्टअप्स की भागीदारी इन प्रयासों से भारत का रक्षा निर्यात भी तेजी से बढ़ा है। भारतीय रक्षा उपकरण अब अनेक देशों को निर्यात किए जा रहे हैं, जिससे विदेशी मुद्रा अर्जन तथा वैश्विक रक्षा बाजार में भारत की उपस्थिति मजबूत हुई है। हालाँकि, इस क्षेत्र में अनेक चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं। उच्च स्तरीय तकनीक की कमी, अनुसंधान एवं विकास में सीमित निवेश, विदेशी तकनीक पर निर्भरता, निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र के बीच समन्वय की कमी, तथा उत्पादन प्रक्रियाओं में देरी जैसी समस्याएँ अभी भी मौजूद हैं।

इसके अतिरिक्त, आधुनिक युद्ध तकनीकोंकृजैसे साइबर सुरक्षा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ड्रोन प्रणाली तथा अंतरिक्ष आधारित रक्षा तकनीककृमें निरंतर निवेश की आवश्यकता है। रक्षा आत्मनिर्भरता का आर्थिक पक्ष भी महत्वपूर्ण है। स्वदेशी रक्षा उद्योग से रोजगार के अवसर बढ़ते हैं, औद्योगिक विकास को गति मिलती है तथा देश की वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षमता मजबूत होती है। इससे राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को भी दीर्घकालिक लाभ प्राप्त होता है।

निष्कर्ष– रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता और स्वदेशीकरण भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक विकास तथा तकनीकी प्रगति के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। यह केवल सैन्य शक्ति बढ़ाने का माध्यम नहीं, बल्कि राष्ट्र की तकनीकी क्षमता, औद्योगिक विकास और वैश्विक प्रतिष्ठा को सुदृढ़ करने का आधार भी है। भारत ने स्वदेशी रक्षा उत्पादन में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं, किंतु पूर्ण आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए अनुसंधान, नवाचार, निजी भागीदारी और आधुनिक तकनीकी विकास पर निरंतर ध्यान देना आवश्यक है। यदि सरकार, वैज्ञानिक संस्थान, रक्षा उद्योग और निजी क्षेत्र समन्वित रूप से कार्य करें, तो भारत निकट भविष्य में विश्व के प्रमुख रक्षा उत्पादक एवं निर्यातक देशों में स्थान प्राप्त कर सकता है।

विदेशी आयात पर निर्भरता कम कर स्वदेशी उत्पादन को बढ़ावा देना समय की मांग है। भारत ने मिसाइल, लड़ाकू विमान, युद्धपोत तथा रक्षा अनुसंधान के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। हालाँकि तकनीकी चुनौतियाँ, अनुसंधान की कमी एवं वैश्विक प्रतिस्पर्धा जैसी समस्याएँ अभी भी मौजूद हैं, किन्तु सरकारी नीतियाँ एवं निजी क्षेत्र की भागीदारी इस दिशा में सकारात्मक परिवर्तन ला रही हैं। यदि भारत निरंतर अनुसंधान, नवाचार एवं स्वदेशी उत्पादन पर बल देता है, तो वह भविष्य में न केवल आत्मनिर्भर रक्षा शक्ति बनेगा, बल्कि वैश्विक रक्षा निर्यातक राष्ट्र के रूप में भी उभर सकता है।

अतः कहा जा सकता है कि रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता केवल सुरक्षा की आवश्यकता नहीं, बल्कि "सशक्त और आत्मनिर्भर भारत" की आधारशिला है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. एम. पी. सिंह कृ भारत की आंतरिक एवं सामरिक सुरक्षा
2. बी. एल. फाडिया कृ भारतीय शासन एवं राजनीति
3. भारत सरकार रक्षा मंत्रालय रिपोर्ट
4. रक्षा उत्पादन एवं निर्यात संवर्धन नीति दस्तावेज
5. योजना पत्रिका कृ आत्मनिर्भर भारत विशेषांक
6. कुरुक्षेत्र पत्रिका
7. mod.gov.in
8. drdo.gov.in
9. makeinindia.com
10. hal&india.co.in
11. स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट (SIPRI) रिपोर्ट

*****